Shodhsamhita
शोधसंहिता
ISSN No. 2277-7067

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that

डॉ. अमिता जैन
सहायक आचार्य(शिक्षा विभाग), जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

For the paper entitled

''उच्च प्राथमिक स्तर के इतिहास पाठ्यक्रम में निहित चित्रात्मक सामग्री''

Volume No. VIII, Issue 12 (VI), 2021-2022

in

Shodhsamhita
Impact Factor: 4.95
UGC Care Group 1 Journal

Editor-in-Chief

SHODHSAMHITA
शोधसंहिता
ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

'उच्च प्राथमिक स्तर के इतिहास पाठ्यक्रम में निहित चित्रात्मक सामग्री''

डॉ. अमिता जैन

सहायक आचार्य(शिक्षा विभाग), जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

सुनिता गौड़

(शोधार्थी)

सारांश :– विद्यार्थियों को ऐतिहासिक स्त्रोतों में चित्रात्मक सामग्री की जानकारी होना आवश्यक है। आधुनिक परिवेश में बालक अपने व्यावहारिक व सामाजिक आचरण को भूलता जा रहा है। बालक को इतिहास विषय में रूचि उत्पन्न हो तथा प्राचिन इतिहास के चित्रों से उसे समझने में सरलता तथा प्रत्यक्ष ज्ञान की प्राप्ति होती है। विद्यार्थियों द्वारा चित्रों को देखकर विषयगत कठिनाईयों को दूर करने में सहायता मिलती है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में चित्रात्मक सामग्री के विश्लेषण से अध्ययन के प्रति समुचित उत्साह उत्पन्न करना प्रमुख कार्य है जो प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर अध्ययन को सुचारू, सरल और व्यावहारिक बनाने की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है।

प्रस्तावना :–पाठ्यपुस्तक सम्पूर्ण ि"ाक्षण प्रणाली का आधार स्तम्भ है और विषय वस्तु का अभिन्न अंग बनाया गया। सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों का समावे"ान करने के द्वारा विद्यार्थियों को एक आलोचनात्मक दूरबीन थमाने की कोि"ा"ा की गई है ताकि अतीत के खास क्षणों को विद्यार्थियों के समक्ष लाया जा सके। अन्य विषयों की अपेक्षा इतिहास ि"ाक्षण में इनका महत्व अधिक बढ़ जाता है क्योंकि इतिहास भूतकाल से सम्बन्ध होता है। भूतकाल प्रायः अस्पष्ट, घूमिल एवं अमूर्त होने के कारण अपने प्रस्तुतीकरण हेतु उपयुक्त कारणों की अपेक्षा रखता है। जिनके माध्यम से वह मूर्त एवं सजीव होकर ि"ाक्षार्थी के लिए सरल, रोचक व बोधगम्य हो सके। विद्यार्थियों में भूतकाल के विषय में सजीवता की इस अनुभूति को जाग्रत एवं विकसित करने में चित्रों की विधाऐं एक वि"िाष्ट भूमिका निभाती हैं। चित्र विद्यार्थियों में विचारोत्तेजना उत्पन्न करते हैं। चित्र विद्यार्थियों को बने–बनाये जवाब देने के बजाय उन्हें स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि विद्यार्थी अपने नतीजों पर स्वयं पहुंच सके तथा अर्थपूर्ण अधिगम हो सकें। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 अनु"ांसा करती है कि पाठ्यपुस्तकों को लेकर अभिभावक ि"ाक्षक और नागरिक

समूहों में चर्चा को बढ़ावा देना चाहिए। विश्वविद्यालयों को पाठ्यपुस्तकों पर शोध अध्ययन के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि स्कूली ज्ञान को लेकर नियमित शोध आधारित जानकारी मौजूद रहे।

पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त विषयवस्तु, चित्रों, मानचित्रों और कार्टूनों के प्रस्तुतीकरण को लेकर असंतोष व्यक्त होता रहा हैं। पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध विवरणों को पूर्णता के साथ विकसित किया गया है। पाठ्यपुस्तकें बच्चों के सीखने की शैली को तवज्जों देती है। पाठ्यपुस्तकों में तस्वीरों तथा रंगीन चित्रों की विधाओं की अधिकता पायी गई। मानव ही ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र ज्ञान का लाभ उठाता है। मानवीय ज्ञान का संचय पुस्तकों के रूप में होता है। ि"क्षण प्रक्रिया में पुस्तकों की उपयोगिता अपरिहार्य है। ि"क्षा जगत ने सर्वमान्य रूप से पाठ्यपुस्तकों को सीखने–सिखाने के साधन के रूप में स्वीकार किया है। पाठ्यपुस्तकें सम्पूर्ण ि"क्षण प्रणाली का आधार स्तम्भ हैं। पाठ्यपुस्तकें ऐसी होनी चाहिए जो कि विद्यार्थी को स्वतंत्र अध्येता के रूप में विकसित करने में सहायक हों। ऐसी पाठ्यपुस्तकें तैयार करना एक चुनौती भरी किन्तु अनिवार्य कार्यवाही है। स्कूली पाठ्यचर्या के चार सुपरिचित क्षेत्र – भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान हैं। इन सुपरिचित क्षेत्रों में से सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत समाज के विविध सरोकार आते हैं। इतिहास सामाजिक विज्ञान का महत्वपूर्ण अंग हैं।

मूल शब्द :– इतिहास पाठ्यक्रम, चित्रात्मक सामग्री, सजीवता।

शोध के उद्देश्य :–

1. चित्रात्मक शैली द्वारा अतीत से सम्बन्धित घटनाओं, तथ्यों, विचारों, समस्याओं, व्यक्तियों आदि का ज्ञान कराना।
2. इतिहास विषय में रुचि उत्पन्न कराना तथा संस्कृति, लोक परम्पराओं और कलात्मक धरोहर के प्रति लगाव पैदा करना।
3. विद्यार्थियों को मानसिक रूप से नये ज्ञान की प्राप्ति हेतु तैयार करना।
4. विद्यार्थियों को अधिक क्रिया"ील बनाना तथा पढ़ने में अधिक रूची बढ़ाना।

उपसंहार :–

इतिहास के द्वारा विद्यार्थियों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है अर्थात् इतिहास स्वयं ज्ञान का भण्डार है जिसमें बालक स्वेच्छानुसार अन्वेषण कर सकते है। इतिहास विषय से विद्यार्थियों को हर काल से जुड़े राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं तत्कालिन् परिस्थितियों के बारे में जानकारी दी जाती है। इतिहास हमें मानव प्रकृति के विभिन्न आयामों एवं पक्षों से अवगत कराता है। इसके अध्ययन से हमें सभ्यता के क्रमिक विकास ज्ञान होता है। इतिहास पाठ्यक्रम में चित्रों के द्वारा सूचना एवं अमूर्त वस्तुओं को भी समझाया जा

सकता है तथा विचार वस्तु का भी प्रतिरूप बनाकर उसके प्रत्येक पक्ष को स्पष्ट किया जा सकता है। ऐतिहासिक सामग्री का शिक्षण कराते समय चित्रों के उपयोग से शिक्षक के आत्मविश्वास तथा निरिक्षण में कुशलता आती है और उसके तथा विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी विकास होता है। इतिहास पाठ्यक्रम में चित्रों द्वारा अध्ययन से विद्यार्थियों को ज्ञानेन्द्रियों का सर्वाधिक प्रयोग करने का अवसर प्राप्त होता है। चित्र विद्यार्थियों के मन और ध्यान को शिक्षण की ओर केन्द्रित करने में उपयोग होते है। इतिहास में चित्रों द्वारा शिक्षण प्रक्रिया को कक्षा–कक्ष जीवन्त बनाने में सहायता मिलती है।

सन्दर्भ :–

1. अग्रवाल, गिर्राज कि"ोर, (2014) ''कला और कलम'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. चतुर्वेदी, ममता, (2010) ''समकालीन भारतीय कला'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
3. www.google.com
4. www.shodganga.inflibnet.ac.in